Success story of the Common facility centre, Baihar, being operated under MPSBM.

MSMEs play a vital role towards achievement of the objectives of "Atmanirbhar bharat", and self-reliánt Madhya Pradesh. They provide employment opportunities to the unskilled, semi-skilled, as well as skilled workers and thus are a backbone of our economy. The Common facility centre, managed by MPSBM in western Baihar area of the North Balaghat Forest division, has made a commendable effort in this direction. It is providing employment to traditional bamboo artisans and promoting their products in the domestic market.

The CFC was originally established in 1981 to provide a common place to artisans for producing baans mats from soomghas and kosha badi. However, due to the shortage of suitable grass for raw material, it had to be shut down in 1995-96. In 2016, owing to the collaborative efforts of MP Forest department and the State Bamboo Mission, it was re-established as a Common facility centre (CFC).Through it, those engaged in bamboo artwork and furniture making are provided further training along with advanced machines to facilitate their work. Moreover, they are provided backward and forward market linkages for sourcing raw materials and selling their products.

Presently, bamboo handicrafts and furniture making at the centre is being managed by Mr. Raju Banjara, a master craftsman. After being trained in various bamboo based products like table sets, sofa sets, chairs, and other decorative items by MPSBM and forest department, he organised "Vananchal self-help group" that carries on manufacturing activities at the CFC. These products are then exhibited and sold in various fairs organised every year across the country.

The SHG has evolved into a self managed profit making entity that uses these gains to make payments to its members engaged in the art. Currently it is also imparting training to other artisans and tribals in the area. Around 50 people have been trained and some 100 families are getting regular employment in associated activities.

For manufacturing such products, the raw materials are supplied by the Van Samiti. This generates an additional stream of income for them. Local farmers engaged in

cultivation of bamboo have also benefitted as they are now more informed on various uses of bamboo and have a place to sell their produce at reasonable rates. More and more farmers are getting encouraged to take up bamboo cultivation.

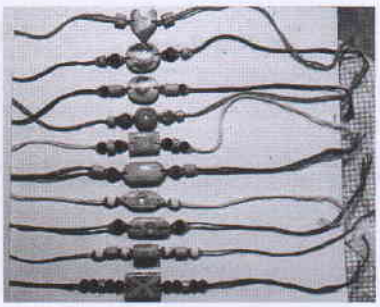

Last year, on the occasion of Rakshabandhan, under the guidance of Mr. Brijendra Shrivastava, DFO, North forest division, Balaghat, an innovative idea of engaging bamboo artisans in rakhi making helped to generate employment for around 10-12 women of the village. In the coming years, a possibility of engaging more women to this initiative is being considered.

At present, the CFC has a stock of advanced machinery including Leth machine, Belt slender machine, and Knot removal machine. Further purchases of Pneumatic nail machine, Vacuum pressure Impregnation machine, and Cross cut machine are being made. This will create additional opportunities for bamboo artisans while improving the quality of their products.

राज्य बांस मिशन अंतर्गत संचालित सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर की सफलता की कहानी

आत्म निर्भर भारत एवं म.प्र. की अवधारणा को सफल करने में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लघु एवं कुटीर उद्योगों द्वारा अकुशल, अर्द्धकुशल, कुशल श्रमिकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं, अतः ये उद्योग किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। म.प्र. राज्य बांस मिशन द्वारा वनमण्डल उत्तर बालाघाट के पश्चिम बैहर परिक्षेत्र अंतर्गत संचालित सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) इसी दिशा में एक अभिनव प्रयास है, जिसके अंतर्गत बांस कला से जुड़े शिल्पकारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं एवं उनके द्वारा निर्मित उत्पादों का विपणन देश एवं प्रदेश स्तर पर हो रहा है।

वर्तमान में संचालित सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC), बैहर की स्थापना वर्ष 1981 में कुटीर उद्योग के रूप में हुई थी। इस केन्द्र में सूमघास रस्सी एवं कोशा बाड़ी के लिए बांस की चटाई बनाई जाती थी परंतु उपयुक्त घास की कमी के कारण वर्ष 1995–96 में यह उद्योग बंद हो गया। 2016 में वन विभाग एवं राज्य बांस मिशन के प्रयासों द्वारा इस उद्योग को पुनः नया स्वरूप देकर सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC), बैहर के रूप में स्थापना की गई। बैहर एक आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है। इस सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) के अंतर्गत बांस शिल्पियों को बांस कला में न केवल प्रशिक्षण एवं बांस आधारित मशीनें उपलब्ध कराई जा रही हैं, अपितु कच्चे माल एवं निर्मित बांस उत्पादों हेतु बाजार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। वर्तमान में सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) अंतर्गत बांस शिल्प कला का कार्य बैहर के मास्टर बांस शिल्पी श्री राजू बंजारा द्वारा अपने समूह के साथ किया जा रहा है। वन विभाग द्वारा मास्टर शिल्पी श्री राजू बंजारा को पूर्व में विभिन्न स्तरों पर बांस से निर्मित सामग्रियों यथा फर्नीचर, टेबल सेट, कुर्सी, सजावट का सामान आदि का प्रशिक्षण दिलवाया गया है।

इन प्रशिक्षणों के पश्चात श्री राजू बंजारा द्वारा ''वनांचल स्वसहायता समूह'' का गठन कर सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) में बांस शिल्प का उत्पादन कार्य प्रारंभ किया गया। समूह द्वारा सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर में बांस निर्मित उत्पादों यथा कुर्सी, टेबल, सोफा एवं सजावट के सामान आदि का निर्माण किया जा रहा है, जिनका प्रदर्शन एवं बिक्री प्रदेश एवं भारत के विभिन्न राज्यों में आयोजित मेलों में किया जाता रहा है।

यह कार्यरत् समूह एक स्वतः संचालित लाभकारी समूह बन चुका है, जहां समूह द्वारा लाभ की राशि से कार्यरत् बांस शिल्पियों को भुगतान किया जा रहा है। वर्तमान में श्री राजू बंजारा द्वारा

उत्तर सा0 वनमण्डल बालाघाट में सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर अंतर्गत न केवल बांस शिल्प कला का कार्य किया जा रहा है, अपितु अन्य बांस शिल्पियों एवं आदिवासीजनों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। वर्तमान में श्री राजू बंजारा द्वारा लगभग 50 लोगों को बांस शिल्प कला का प्रशिक्षण दिया जा चुका है एवं लगभग 100 से अधिक परिवार इस बांस शिल्प कला के कार्य से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। बांस निर्मित वस्तुओं के कच्चे माल हेतु कटंग बांस आदि का प्रदाय वन समितियों के माध्यम से किया जा रहा है। इस प्रकार यह व्यवस्था वन समितियों की आमदनी का एक अच्छा स्त्रोत भी सिद्ध हो रही है। बांस की खेती करने वाले स्थानीय कृषकों को सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर के संचालन से प्रोत्साहन मिला है। उन्हें बांस के उपयोग की जानकारी मिली है। बांस कृषकों द्वारा उचित मूल्य पर बांस का विक्रय सामान्य सुविधा केन्द्र में कार्यरत शिल्पियों को किया जा सकता है। समूह द्वारा पूर्व में बांस भिर्रे की गुणवत्ता के अनुसार 50 हजार रूपये प्रति भिर्रा का भुगतान भी किया जा चुका है।

विगत रक्षाबंधन के पर्व में श्री ब्रिजेन्द्र श्रीवास्तव, वनमण्डलाधिकारी उत्तर सा0 वनमण्डल बालाघाट के मार्गदर्शन में राखी बनाने का नवाचार किया गया, जिससे 10–12 महिलाओं को

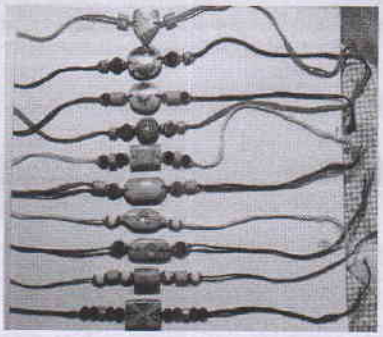

रोजगार के अवसर प्राप्त हुए। भविश्य में और अधिक महिलाओं के इस कार्य से जुड़ने की संभावना है।

वर्तमान में उत्तर सा0 वनमण्डल बालाघाट स्तर पर सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC)' बैहर में बांस आधारित आधुनिक मशीनों जैसे– लेथ मशीन, बेल्ट सेंडर मशीन, नॉट रिमूवल मशीन आदि की स्थापना तथा न्यूमेटिक नेल मशीन, वैक्यूम प्रेशर एण्ड इम्प्रेगनेशर मशीन, क्रॉस कट मशीन आदि का क्रय किया जा रहा है जिससे बांस आधारित शिल्प उद्योग में रोजगार के और अधिक अवसर सृजित होंगें तथा बांस उत्पादों की गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जा सकेगी। इस प्रकार भविष्य में सामान्य सुविधा केन्द्र (CFC) बैहर की सफलता की गाथा में और भी अध्याय जुड़ने की संभावना है।